चूरू : परिचय व जैव विविधता

- चूरू जिला राजस्थान में 27°24' से 29° 00' उत्तरी अक्षांश और 73° 40' से 75° 41' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जो औसत समुद्र तल से 286.207 मीटर की ऊँचाई पर है। चूरू जिले का कुल क्षेत्रफल 13,859 वर्ग किमी. है जिसमें से केवल 72.71 किमी. है. वन क्षेत्र है। जो कुल क्षेत्रफल का 0.52 प्रतिशत है जो कि राजस्थान में न्यूनतम है। जिले में कृषि भूमि 12658.8, चरागाह भूमि 377.2 वर्ग किमी. है। औसतन तापक्रम 0° से 50° से., जनवरी माह में चूरू जिले का तापमान जमाव बिन्दु से नीचे भी पहुंच जाता है। वर्ष 2006 में न्यूनतम – 3.4° से. तक गिर गया था। जिले की औसत वर्षा लगभग 313.70 मिमी. है। यह राजस्थान का एकमात्र जिला है जिसमें कोई बरसाती अथवा स्थायी नदी नहीं बहती है।
- जिले की वनस्पति यहां की भौगोलिक परिस्थितियों एवं जलवायु के अनुरूप अत्यन्त विरल एवं परिभाषित अवस्था में है। वृक्ष प्राकृतिक रूप से वन क्षेत्रों में 0.1 से 0.2 के घनत्व में पाये जाते हैं। जो ''शुष्क मरु कांटा वन'' के तहत आते हैं। खेजड़ी, कूमठा, बेर, झींझा, जाल, रोहिड़ा, बबूल, हिंगोट, पीपल, नीम, कैर इत्यादि प्रजातियाँ पाई जाती हैं। झाड़ी बेर, सणियाँ, खींप, बुई एवं फोग की झाड़ियाँ भी पायी जाती हैं। जैव विविधता की दृष्टि से यहाँ की वनस्पति मूल रूप से मरुद्भिद है, यहाँ 36 प्रजाति के पेड़, 38 प्रजाती की झाड़ी एवं लताएं 7 प्रकार की व 13 घास की प्रजातियां पाई जाती हैं।
- वन्य जीव विविधता हेतु ताल छापर वन्य जीव अभयारण्य विश्व प्रसिद्ध है। कृष्णमृग अभयारण्य ताल छापर का कुल क्षेत्रफल 719.77 है. आरक्षित वन क्षेत्र है। वन्य जीव अभयारण्य कृष्णमृग संरक्षण हेतु बनाया गया था, किन्तु आज यह पक्षी विविधता हेतु विश्व प्रसिद्ध है। सम्पूर्ण अभयारण्य में मुख्य प्रजाति के रूप में देशी बबूल, खेजड़ी, बेर तथा सहप्रजाति के रूप में मोथिया घास, लाणा, करड़, दूब, झेरणिया घास आदि प्राकृतिक रूप से विकसित है। जिले में स्तनधारी वर्ग के 26; पक्षी वर्ग के 250 से अधिक व सरीसृप वर्ग की 15 प्रजातियों के वन्य जीव पाये जाते हैं।
- मुख्य खाद्य फसलों में बाजरा, मोठ, सरसों, चना, ग्वार, गेहूं, जौ, तिल, तारामीरा, राई आदि शामिल हैं। प्याज, गोभी एवं तरबूज की पैदावार भी ली जाती है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की आबादी 20,39,547 है। जिसमें से पुरुष – 1051446 व स्त्रियाँ – 988101 हैं।
- जिले में पशुधन गणना 2007 के अनुसार कुल 1891314 पशुधन हैं, जिसमें भेड़ – 452293, भैंस एवं भैंसें – 214673, बकरियाँ – 919579, गाय बैल – 256223, ऊंट – 41279, घोड़े – 379, टट्टू – 34, खच्चर – 29, गधे – 6167 हैं।
- जैव विविधता संरक्षण कर प्राकृतिक आपदाओं पर अंकुश लगाने व सतत उपयोग हेतु टिब्बा स्थिरीकरण कार्य, ग्रामीण ईंधन वृक्षारोपण, चरागाह विकास, पौध वितरण, हरित राजस्थान कार्यक्रम एवं मनरेगा आदि परियोजनाएं चलाई जा रही हैं।
- गोंद उत्पादन हेतु कूमठा व देशी बबूल व काचरी, कैर, सांगरी, कूमठा बीज आदि की स्थानीय रूप से तैयार की जाने वाली 'पंचकुटा' की सब्जी हेतु एवं मूंज, फोगला, लूंग एवं पाला भी वनों से प्राप्त होते हैं। औषधीय प्रजातियों जैसे शंखपुष्पी, अरण्डी, ग्वार–पाठा, अश्वगंधा, कंटेली, सहजना जैसी औषधीय प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं।

बोर्ड की गतिविधियाँ

(जैव विविधता अधिनियम, 2002 की धारा 22 के प्रावधानानुसार, राजस्थान सरकार द्वारा राज्यादेश क्रमांक प.4(8) वन/2005/पार्ट–I जयपुर, दिनांक 14 सितम्बर, 2010 से राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड की स्थापना की गई।)

❊ अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह का आयोजन

❊ जैव विविधता विषयक सामग्री का प्रकाशन

❊ कार्यशाला, प्रशिक्षण शिविर, इको–क्लब/ बी.एम.सी. सदस्यों का भ्रमण आयोजन

❊ जैव विविधता प्रबंध समितियों का गठन व लोक जैव विविधता पंजिका तैयार करना

❊ जैविक संसाधनों का संरक्षण
❊ जैव विविधता विरासतीय स्थलों का चयन एवं अधिसूचित
❊ जैव सम्पदा के व्यवसायिक उपयोग का स्टेटस सर्वे
❊ प्रोत्साहन वर्धन

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

भूमि माता है, समस्त जीव इसके अवयव हैं, हम पृथ्वी पुत्र हैं। इसका संरक्षण, संवर्धन व सतत् उपयोग करना हमारी कर्तव्य परायणता है।

जैव विविधता : चूरू

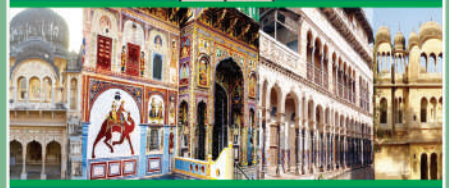

राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड

7, द्वारिकापुरी, जमना लाल बजाज मार्ग, सी–स्कीम, जयपुर

जैव विविधता

पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवन के पृथक-पृथक रूप ही जैव विविधता है। समृद्ध जैव विविधता बहुत कुछ प्रदान करती है, यथा भोजन, औषधियाँ, वस्त्र, आवास, आमोद-प्रमोद के साधन, सांस्कृतिक, शोध के अवसर, उद्योगों के लिये कच्चा माल और बहुत कुछ।

चूरू की समृद्ध जैव विविधता

सब कुछ देती जैव विविधता। सतत् उपयोग से बनी रहेगी समरसता।।
अत: जैव विविधता संरक्षण हेतु हम आज ही शपथ लेवें।

जैव विविधता पर बढ़ते संकट

- आनुवंशिक विविधता में कमी व निम्नीकरण
- आवास विखंडन

लुप्त प्रजाति

प्रजाति में होता क्षरण

- प्राकृतिक संसाधनों का अति उपभोग

- विदेशी प्रजातियों का प्रसार

- जलवायु परिवर्तन

- मरुस्थलीय प्रसार

- भूउपयोग परिवर्तन

- विकास परियोजना का प्रभाव

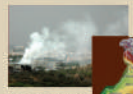

70% भूभाग का जैव विविधता सर्वेक्षण ही हुआ है 46000 पादप व 89000 जन्य प्रजातियों का पता लगा है, लगभग 4 लाख प्रजातियां हैं।

- प्राकृतिक आपदा

- जैव विविधता सूचना का अभाव

आओ हम सब, हमारे व आने वाली पीढियों के लिये,
जैव विविधता का संरक्षण, संवर्धन व सतत उपयोग करें।

जैव विविधता संरक्षण व सुधार के उपाय

स्थानिक प्रजातियों को बढ़ावा देना

विदेशी प्रजातियों का उन्मूलन

जैविक खाद व कीटनाशक का प्रयोग

जैविक संघटकों का सतत उपयोग

अक्षय ऊर्जा का उपयोग

वन्य जीवों का संरक्षण

वनों का संरक्षण

जैव विविधता सूचना का प्रत्येक स्तर पर संकलन करना

अब भी समय है, हम हमारी जैव विविधता को संकट मुक्त कर
आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करें।